Serving Education for Last 40 Years

NEERAJ®

M.G.P.E. -9

21वीं सदी में गाँधी

(Gandhi in the 21st Century)

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Dr. Archana Sisodia*

NEERAJ
PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 280/-

<u>Content</u>

21वीं सदी में गाँधी

(Gandhi in the 21st Century)

Question Paper—June-2023 (Solved) 1-2
Question Paper—December-2022 (Solved) 1-2
Question Paper—Exam Held in March-2022 (Solved) 1-3
Question Paper—Exam Held in August-2021 (Solved) 1-2
Question Paper—Exam Held in February-2021 (Solved) 1-2
Question Paper—June, 2019 (Solved) 1-3
Question Paper—December, 2018 (Solved) 1
Question Paper—June, 2018 (Solved) 1-3
Question Paper—December, 2017 (Solved) 1-2
Question Paper—June, 2017 (Solved) 1

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

1. भूमंडलीकरण की समझ और इसके जटिल प्रभाव-I (आर्थिक और प्रौद्योगिकीय) 1
(Understanding Globalization and its Ramifications-I
(Economy and Technology))

2. भूमंडलीकरण की समझ और इसके जटिल प्रभाव-II 8
(सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक)
(Understanding Globalization and its Ramifications-II
(Social, Political and Cultural))

3. आजीविका/संस्कृति/जीवनशैली और पर्यावरण 15
(Livelihood/Culture/Lifestyle and Environment)

4. विश्व व्यवस्था पर गाँधी की दृष्टि 23
(Gandhi's Vision of a Global Order)

5. व्यक्ति के प्रति गाँधीवादी विचार 32
(Gandhian Idea of Man)

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

6. राज्य की प्रकृति पर बहस 40
(Debates on the Nature of State)

7. लोकतंत्र की समस्याएँ और व्यवहार 49
(Problems and Practices of Democracy)

8. आज का ग्राम स्वराज 58
(Gram Swaraj Today)

9. सर्वधर्म समभाव 66
(Sarva Dharma Sambhava)

10. सांस्कृतिक विविधताएँ 73
(Cultural Diversities)

11. सामाजिक समावेशन 80
(Social Inclusion)

12. महिला सशक्तिकरण 88
(Empowering Women)

13. विज्ञान और प्रौद्योगिकी 97
(Science & Technology)

14. मीडिया 106
(Media)

15. आतंकवाद 112
(Terrorism)

16. मानव अधिकार 120
(Human Rights)

■ ■

Sample Preview
of the
Solved
Sample Question
Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2023

(Solved)

21वीं शताब्दी में गाँधी

(Gandhi in the 21st Century)

M.G.P.E.-9

समय : 2 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 50*

***नोट :** किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक खण्ड से न्यूनतम दो प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।*

खण्ड-I

प्रश्न 1. भूमण्डलीकरण का प्रभाव भारत पर क्या रहा है?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-14, प्रश्न-3

प्रश्न 2. ''विश्व सरकार की परिकल्पना आधुनिक राज्य व्यवस्था में बनी वह महात्मा गांधी की नजरों में अभिशाप है।'' व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-4, पृष्ठ-30, प्रश्न-3

प्रश्न 3. बहुलवादी राज्य कौन-सा है? शुम्पीटर और रॉबर्ट डहल के विचारों के अनुसार इसका विश्लेषण कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-6, पृष्ठ-41, 'बहुलवादी राज्य' तथा पृष्ठ-47, प्रश्न-4

प्रश्न 4. गांधी का ग्राम स्वराज का उद्देश्य क्या था?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-8, पृष्ठ-63, 'ग्राम स्वराज : वर्तमान संदर्भ'

प्रश्न 5. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए–

(अ) भूमण्डलीकरण के फायदे

उत्तर–वैश्वीकरण शब्द से हमारा मतलब है कि अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा को प्राप्त करके विश्व बाजार के लिए अर्थव्यवस्था को खोलना। इस प्रकार अर्थव्यवस्था का वैश्वीकरण केवल दुनिया के विकसित औद्योगिक देशों के साथ उत्पादन, व्यापार और वित्तीय लेनदेन से संबंधित देश की बातचीत को इंगित करता है। तदनुसार, वैश्वीकरण शब्द के चार पैरामीटर हैं-

1. देशों के बीच व्यापार बाधाओं को हटाने या कम करके माल के मुक्त प्रवाह की अनुमति देना।

2. देशों के बीच पूंजी के प्रवाह के लिए वातावरण बनाना।

3. प्रौद्योगिकी हस्तांतरण में मुक्त प्रवाह की अनुमति देना।

4. दुनिया के देशों के बीच श्रम के मुक्त आवागमन के लिए वातावरण बनाना।

इस प्रकार सम्पूर्ण विश्व को वैश्विक गाँव के रूप में लेते हुए, सभी चार घटक भूमंडलीकरण के लिए एक सुगम मार्ग प्राप्त करने के लिए समान रूप से महत्वपूर्ण हैं। विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) के फ्रेम वर्क के भीतर राष्ट्र राज्यों को एकीकृत करके वैश्वीकरण की अवधारणा, शास्त्रीय अर्थशास्त्रियों द्वारा आपसी लाभ के लिए देशों के बीच वस्तुओं के अप्रतिबंधित प्रवाह को संभालने के लिए प्रचारित 'तुलनात्मक लागत लाभ का सिद्धांत' का एक वैकल्पिक संस्करण है।

इस बीच, दुनिया के विभिन्न देशों ने वैश्वीकरण की नीति को अपनाया है। उसी रास्ते पर चलकर भारत ने भी 1991 के बाद से इसी नीति को अपनाया था और मात्रात्मक प्रतिबंधों (क्यूआर) के चरण-वार को समाप्त करने के साथ व्यापार बाधाओं को दूर करने की प्रक्रिया शुरू की थी।

तदनुसार, भारत सरकार अपने बाद के बजटों में सीमा शुल्क की चरम दर को कम कर रही है और EXIM नीति 2001-2002 में शेष 715 वस्तुओं पर क्यूआर हटा दिया गया है। इन सभी के परिणामस्वरूप देश के लिए नए बाजारों और नई प्रौद्योगिकी की खुली पहुंच हुई है।

वैश्वीकरण के लाभ-भारत जैसे विकासशील देश के लिए वैश्वीकरण के कुछ महत्वपूर्ण लाभ निम्नलिखित हैं-

1. वैश्वीकरण देश की अर्थव्यवस्था की दीर्घकालीन औसत विकास दर को बढ़ाने में मदद करता है–संसाधनों की आवंटन दक्षता में सुधार; श्रम उत्पादकता में वृद्धि; पूंजी-उत्पादन अनुपात में कमी।

2. वैश्वीकरण उत्पादन प्रणाली में अक्षमता को दूर करने का मार्ग प्रशस्त करता है। वैश्वीकरण की अनुपस्थिति में लंबे समय तक सुरक्षात्मक परिदृश्य लागत प्रभावशीलता के बारे में उत्पादन प्रणाली को लापरवाह बनाता है, जिसे वैश्वीकरण की नीति का पालन करके प्राप्त किया जा सकता है।

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

(ब) सामाजिक लोकतंत्र

उत्तर–सामाजिक लोकतंत्र एक ऐसी प्रणाली है, जो व्यक्ति के अधिकारों और स्वतंत्रता का संरक्षण करती है। इस प्रणाली में लोगों के विकास और प्रगति के लिए अधिकारों की रक्षा की जाती है। सामाजिक लोकतंत्र में समानता, न्याय और स्वतंत्रता का संरक्षण किया जाता है। इस प्रणाली में व्यक्ति अपने अधिकारों के लिए संघर्ष कर सकते हैं और समानता, न्याय और स्वतंत्रता की रक्षा कर सकते हैं। सामाजिक लोकतंत्र एक ऐसा तंत्र है, जो सभी लोगों को समानता और स्वतंत्रता का अधिकार प्रदान करता है। इस प्रणाली में अधिकार और जिम्मेदारियों के वितरण में समानता की रक्षा की जाती है। इसके अलावा अन्य विशेषताएं निम्नलिखित हैं–

1. स्वतंत्रता–इसमें लोगों को खुद के अधिकारों के लिए संघर्ष करने की स्वतंत्रता होती है। लोग अपने विचारों और विचारों के आधार पर राजनीतिक दलों को चुनते हैं।

2. संवैधानिक दल–इसमें, संवैधानिक दल लोगों के अधिकारों और स्वतंत्रता के संरक्षण के लिए जिम्मेदार होते हैं। इन दलों की मुख्य भूमिका लोगों के विचारों और मांगों को व्यक्त करना होता है।

3. न्यायप्रणाली–इसमें न्यायप्रणाली उपलब्ध होती है जो सभी लोगों को समान रूप से न्याय देती है। यह न्याय प्रणाली विभिन्न मामलों में न्याय करती है, जैसे अपराध, संबंधों के बंधन और संपत्ति विवाद।

4. समानता–इसमें समानता की मूलभूत विशेषता होती है। यहाँ पर सभी लोगों को समान अधिकारों की प्राप्ति होती है, जो उन्हें व्यक्तिगत और सामाजिक विकास में मदद करती है। समानता की इस मूलभूत विशेषता के कारण, सामाजिक लोक तंत्र आमतौर पर एक दृष्टिकोण से न्यायपूर्ण और संतुलित माना जाता है।

5. चुनाव और स्वतंत्र निर्णय–चुनाव एक महत्वपूर्ण विधान होता है। लोगों को अपने विशेषाधिकारों के लिए मतदान करने की स्वतंत्रता मिलती है जो उन्हें अपनी स्वतंत्र निर्णय लेने में मदद करती है।

6. जनहित–इसमें नागरिकों की हितों का ध्यान रखा जाता है। यह उन्हें अपने हितों की रक्षा करने के लिए अधिकार होता है।

खण्ड-II

प्रश्न 6. गांधी के समावेशी विचारों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-11, पृष्ठ-86, प्रश्न-3

प्रश्न 7. विज्ञान और प्रौद्योगिकी पर गांधी के विचारों पर निबन्ध लिखिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-13, पृष्ठ-101, 'विज्ञान और प्रौद्योगिकी के बारे में गांधीवादी दृष्टि'

प्रश्न 8. आतंकवाद के सन्दर्भ में धर्म और संस्कृति की क्या भूमिका होती है? इसका विश्लेषण कजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-15, पृष्ठ-112, 'परिचय', पृष्ठ-117, प्रश्न-2

प्रश्न 9. मीडिया की भूमिका की समकालीन विश्व के सन्दर्भ में व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-14, पृष्ठ-106, 'समकालीन विश्व में मीडिया'

प्रश्न 10. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए–

(क) गांधी का धर्मनिरपेक्षता विचार

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-9, पृष्ठ-71, प्रश्न-3

(ख) गांधी और महिला सशक्तिकरण

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-12, पृष्ठ-89, 'गांधी और महिला सशक्तिकरण'

■■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

Sample Preview
of
The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

21वीं सदी में गाँधी

(Gandhi in the 21st Century)

भूमंडलीकरण की समझ और इसके जटिल प्रभाव-I (आर्थिक और प्रौद्योगिकीय)

(Understanding Globalization and its Ramification-I (Economy and Technology))

1

परिचय

भूमंडलीकरण को आदिम समाज से लेकर आधुनिक उपग्रह तथा वैश्विक संरचना वाले मानवीय सभ्यता के समाज में विकास की प्रक्रिया के लिए संघर्ष के रूप में देखा जाता है। यथार्थ रूप में भूमंडलीकरण के आशय को उन सभी मानवीय अनुभवों तथा प्रभावों से जोड़ा जाता है जो उसने संपूर्ण विश्व से ग्रहण किए हैं, इसलिए भूमंडलीकरण की पृष्ठभूमि को मानव इतिहास से संबंधित किया जाता है। अफ्रीका में मानव जाति की उत्पत्ति तथा प्रसार के दौरान ही मनुष्य ने पशु-पालन, कृषि, खोज तथा आविष्कारों की शुरुआत की तथा जिनकी प्रौद्योगिकीयों का आविष्कार चीन, मैसोपोटामिया तथा मध्य अमेरिका से होता हुआ संपूर्ण विश्व में फैलकर लगातार प्रसारित होता रहा। जो मानव इतिहास से लेकर वर्तमान समय तक जारी है। अनेक महाद्वीपों के लोगों का एक-दूसरे की वस्तुओं, फसलों, उपभोग सामग्री की वस्तुओं तथा व्यापार व अन्य प्रौद्योगिकीय कौशलों के परिचय की शुरुआत के रूप में 16वीं सदी से ही भूमंडलीकरण की प्रक्रिया मनुष्य के साथ अभिन्न रूप में जुड़ी हुई है और निजीकरण, उदारीकरण जैसे वैश्विक आर्थिक सुधारों तथा संपर्कों के राष्ट्रीय प्रतिबंधों में स्वतंत्रता मिलने से 'भूमंडलीकरण' ने अत्यधिक ख्याति अर्जित की, जिसे प्राय: वर्तमान समय में अन्तर्राष्ट्रीय तथा राष्ट्रीय सीमाओं के पार के रूप में मुक्त व्यापार तथा मुक्त बाजार की अवस्था के रूप में देखा जाता है।

मार्क्स तथा एंजिल्स मुक्त व्यापार की प्रक्रिया में पूंजी की स्वतंत्रता के कारण इसका तीव्र विरोध करते हैं, क्योंकि यह मज़दूरों व पूंजीपतियों के मध्य अंतर को बढ़ावा देता है। विश्व अर्थव्यवस्था, राज्य-अर्थव्यवस्था, संस्कृतियों व बाजारों के मध्य अनुभवों सहित एकीकरण की प्रक्रिया को तीव्र गति प्राप्त होने के परिणामस्वरूप भूमंडलीकरण का महत्त्व अत्यधिक बढ़ गया है तथा इसके जटिल प्रभावों के आगामी परिणाम पर विद्वानों के विचार मिश्रित तथा भिन्न पाए गए हैं। भूमंडलीकरण के फलस्वरूप जिन समस्याओं के समाधान की आशा की जाती थी और इसके आधार पर ही इस प्रक्रिया का समर्थन लोगों ने किया था। वह सुधार प्रक्रिया की अनुपस्थिति करने में असमर्थ सिद्ध हुआ है। अन्य विरोधी पक्षों के विद्वानों ने भूमंडलीकरण को वर्तमान समय में गरीब तथा साधनविहीन लोगों तथा इसके अस्तित्व हेतु लाभकारी नहीं माना है। भूमंडलीकरण के कारण ही वर्तमान विश्व व्यवस्था वैश्विक आर्थिक मंदी के शिकंजे में जकड़ी हुई है, जो सन 1930 के दशक से भी अधिक व्यापक है।

अध्याय का विहंगावलोकन

आर्थिक भूमंडलीकरण की उत्पत्ति

आर्थिक भूमंडलीकरण की प्रक्रिया को व्यापारिक प्रक्रिया के रूप में धन को बहुमूल्य धातुओं के सर्जन का महत्त्वपूर्ण कारक माना जाता है, जिसमें राज्य को 16वीं-17वीं सदी में एक शक्तिशाली रचनातंत्र के रूप में उपनिवेशों का शोषण करने, निर्यात को बढ़ावा तथा आयात पर प्रतिबंध लगाने हेतु अनिवार्य माना गया है। 18वीं सदी में औद्योगिक क्रांति के परिणामस्वरूप मुक्त अर्थव्यवस्था के अंतर्गत प्रतिबंधित भूमंडलीकरण तथा प्रभुत्व के शासन को बल मिला, जिसके अंतर्गत विकासशील देशों से कच्चे माल की प्राप्ति, इनके बाजारों पर नियंत्रण तथा इनके औद्योगिक उत्पादन को योजनाबद्ध प्रक्रिया द्वारा नष्ट किया जाना शामिल था। इसके साथ ही भूमंडलीकरण के दूसरे आयाम के रूप में उपनिवेशों से औद्योगिक

देशों में मजदूरों का अवैध प्रवासन भी तीव्र गति से सामने आने लगा। आर्थिक भूमंडलीकरण के परिणामस्वरूप व्यापार का व्यापक प्रसार, प्रभुत्व व नेतृत्व के पुन: निर्धारण हेतु हथियारों के लिए द्वितीय विश्व तथा उसके पश्चात्–व्यापक, आर्थिक, वैश्विक मंदी जैसे संकट उत्पन्न होने लगे।

मार्क्स तथा एंजिल्स भी यह मानते हैं कि वस्तुओं हेतु बाजार की आवश्यकता की पृष्ठभूमि ने एक प्रकार के बुर्जुआ वर्ग (पूंजीपति वर्ग) का अनुसरण किया है, जिसके कारण वैश्विक बाजारों के शोषण के माध्यम से सभी देशों में उत्पादन तथा उपभोग को वैश्विक चरित्र प्रदान करते हुए औद्योगिक क्रांति से भूमंडलीकरण के अंतर्गत विकसित आयामों से पूर्व स्थापित राष्ट्रीय उद्योगों को नष्ट करके नवीन उद्योगों की स्थापना द्वारा उन्हें हटाया जा रहा है, जो आर्थिक भूमंडलीकरण के दुष्प्रभाव के रूप में देखा जाता है। इसके साथ ही साम्राज्यवादी अवधारणा के उदय के साथ ही संपूर्ण विश्व में कच्चे माल के स्रोतों की तलाश तीव्र प्रतिस्पर्द्धा तथा उपनिवेशों के अधिग्रहण हेतु भयानक संघर्ष उत्पन्न होने लगे।

गाँधी भी पूंजीवाद के विस्तार के परिणामस्वरूप औद्योगीकरण को भारत में अपनाये जाने के पश्चात् शोषण की संभावना से इंकार नहीं करते थे। यद्यपि वे भूमंडलीकरण के विरुद्ध नहीं थे, तथापि वे औद्योगीकरण की पृष्ठभूमि में ऐसे वैश्विक गाँव के विकास के पक्षपाती थे, जहां विकास के वैकल्पिक साधनों के माध्यम से शांतिपूर्ण संबंधों सहित सभी एक-दूसरे पर निर्भर होकर औद्योगीकरण, पूंजी तथा वित्त के शोषक भूमंडलीकरण से दूर हों।

यूरोप का विश्व में आधुनिक औद्योगीकरण के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है, जिसने गैर-परंपरागत उर्जा स्रोतों तथा बाजारों पर नियंत्रण हेतु महाशक्तियों के मध्य संघर्षों को बढ़ावा दिया तथा दो विश्व युद्धों के दौरान पूंजीवादी ताकतों के मध्य हितों के संघर्षों ने व्यापक रूप से संपत्ति तथा जानमाल को क्षति पहुँचायी।

सन 1914 के प्रथम विश्व युद्ध तथा 1929 की महामंदी ने गलाकाट प्रतिस्पर्द्धा तथा द्वितीय विश्व युद्ध के विश्व प्रशासन रचनातंत्र के नवीन अनुक्रम प्रस्तुत किए गए, जिसके कारण बेरोजगारी का सामना करते हेतु कल्याणकारी राज्य की स्थापना के अंतर्गत वित्तीय संस्थाओं जैसे–अंतर्राष्ट्रीय बैंक (IBRD), अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF), संयुक्त राष्ट्र परिषद् (UNCTAD) तथा विश्व व्यापार संगठन (WTO) का निर्माण किया गया, जो विश्व की प्रभुत्व संपन्न शक्तियों के हाथों में प्रशासन तथा नियंत्रण के नवीन यंत्र हैं। उपरोक्त संस्थाएं पूंजी के कल्याणकारी रूप को दर्शाने, विश्व बाजार में स्वतंत्र विस्तार और वृद्धि को ढकने के उप-उत्पाद माने जाते हैं, इसलिए भूमंडलीकरण बाजार के प्रारंभिक नियंत्रण में युद्ध तकनीकी से लेकर बाद में कल्याणकारी यंत्र, नीतियों और विकास कर्जों के माध्यम से नियंत्रण द्वारा राजनीति की जाती है।

विश्लेषणात्मक ढाँचे के अन्तर्गत गांधी ने औद्योगीकरण को आधुनिक विकास के लिए शोषक माना है तथा इसे भारत के भविष्य के लिए पाश्चात्य अनुकरण के आधार पर अंधकारमय माना है। यह पूर्णरूप से भिन्न विश्वदर्शन होने के बावजूद भी बोल्शेविक औपनिवेशिक विचारधारा के निकट है, जोकि साम्राज्यवाद को पूंजीवाद के विकास का अनिवार्य चरण मानता है। इसके विस्तार के फलस्वरूप क्षेत्रीय असमानता तथा असमान विकास ने एक क्षेत्र के लोगों का दूसरे के द्वारा शोषण की नीति को बढ़ावा दिया है, जिसके कारण संग्रहण की प्रवृत्ति का लाभ मुख्यत: विकसित देशों को ही प्राप्त हुआ है।

सार्वभौमिक अर्थव्यवस्था की गति धीमी करना और इसके जटिल प्रभाव

बढ़ती हुई अर्थव्यवस्था हेतु रोजगार सृजन तथा कार्यबल अनिवार्य शर्त है, जो विश्व रोजगार तथा उसके क्षेत्रीय वितरण को समझने हेतु आधार प्रदान करता है। विश्व अर्थव्यवस्था की वास्तविक वृद्धि लम्बी अवधि के दौरान केवल सन 1940 तथा 1960 के दशक में ही देखने को मिली है, जबकि अन्य दशकों में विश्व अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर 1.3% रही तथा 1980 के दशक में 3.1% तथा सन 2007 में 2.6% तक निम्न गिरावट दर्ज की गई।

वृद्धि में क्षेत्रीय असमानता भी बहुत अधिक है। विकसित देश भी सकल घरेलू उत्पाद में केवल 2.5% की दर से वार्षिक वृद्धि ही कर पाए हैं। सन 1993-2003 में अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन ने विश्व की 3.5% वृद्धि दर्ज की थी तथा इसमें भी सर्वाधिक वृद्धि दर पूर्वी तथा दक्षिणी एशिया की रही। सब-सहारा अफ्रीका, लैटिन अमेरिका तथा कैरीबियन की औसत वृद्धि दर बहुत कम थी तथा संक्रमणकालीन अर्थव्यवस्थाओं में 0.2% दर के साथ निष्क्रियता देखी गई। विश्व में वृद्धि के वितरण की असमानता के कारण निम्नतम निवेश, मांग तथा रोजगार के गंभीर परिणाम सामने आने लगे।

रोजगार के क्षेत्र में भी परिणाम उत्साहवर्धक नहीं मिले, क्योंकि विश्व का रोजगार जनसंख्या के अनुपात से 1.26% घटा है, जिसमें श्रम शक्ति 1.8% तथा श्रम उत्पादकता में 1% ही वार्षिक वृद्धि दर्ज की गई, जिसमें मध्य एशिया, उत्तरी अफ्रीका तथा सब-सहारा अफ्रीका की अर्थव्यवस्थाओं में सकारात्मक वृद्धि दर्ज की गई, किन्तु श्रम उत्पादकता की स्थिति सब-सहारा अफ्रीका में श्रम-शक्ति की उच्च वृद्धि दर के कारण नकारात्मक

रही तथा रोजगार का अनुपात रुग्ण अर्थव्यवस्थाओं में सर्वाधिक होने के कारण यह वैश्विक रोजगार विहीनता वृद्धि के लक्षणों को उजागर करता है।

विश्व के सकल घरेलू उत्पाद में 3.5% की बढ़ोतरी के पश्चात् भी बेरोजगारी में अत्यधिक वृद्धि देखी गई है। जो सन 1993 में 5.6% से बढ़कर सन 2003 में 6.2% हो गई तथा मध्यपूर्व और उत्तरी अफ्रीका में इसकी दर सबसे अधिक है। इसके उपरांत सब-सहारा अफ्रीका, लैटिन अमेरिका तथा कैरिबियन का स्थान है। सन 2005 के अंत में 2.85 लाख कार्यरत लोगों में से अब भी सिर्फ दस वर्ष पूर्व 1.4 अरब लोग केवल 2 अमरीकी डॉलर ही प्रतिदिन अर्जित कर पाए हैं, जिसमें से 520 लाख लोग भयंकर गरीबी के साथ केवल 1 अमरीकी डॉलर प्रतिदिन के साथ जीवन-निर्वाह कर रहे हैं।

21वीं सदी में औद्योगिकीकरण के बावजूद भी इस विश्व का पांचवाँ श्रमिक 1 अमरीकी डॉलर प्रतिदिन अर्जित करते हुए जीवित रहने की असंभव परिस्थिति का सामना करने हेतु विवश है।

औद्योगिक देशों में लम्बी कार्यावधि के उपरांत भी न्यूनतम वेतन प्राप्ति के कारण श्रमिकों की स्थिति गंभीर बनी हुई है। विभिन्न देशों के मध्य तुलनात्मक अध्ययन विश्व में 1 अमरीकी डॉलर प्रतिदिन आय अर्जित करने वाले 19.7% मजदूर भयंकर गरीबी में जीवन-निर्वाह कर रहे हैं तथा सब-सहारा अफ्रीका तथा दक्षिण एशिया में इन मजदूरों की संख्या सर्वाधिक है, जो गरीबी रेखा के चरम-बिन्दु पर अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

सब-सहारा अफ्रीका में श्रमिक गरीबों के आय के अनुपात में पिछले 13 वर्षों से कोई परिवर्तन नहीं आया है और दक्षिण-पूर्व एशिया तथा पूर्वी एशिया के श्रमिकों में गरीबी का प्रसार दर क्रमशः 58.8 तथा 49.2 प्रतिशत बना हुआ है। सन् 2015 में विश्व में गरीबों की संख्या में से भी 90 लाख लोग गरीबी की चरम अवस्था लगभग 826 लाख लोग कुपोषण से ग्रस्त तथा लगभग 1 अरब लोग उन्नत जल संसाधनों से वंचित बने हुए हैं।

खाद्य और कृषि संगठन (FAO) के अनुसार लगभग 850 लाख लोग कुपोषित तथा इनमें 9 लाख लोग भूख से मृत्यु को प्राप्त हुए हैं, जिनमें 5 लाख बच्चे हैं। इससे सृजनशील मनुष्य जीवन के 220 लाख वर्षों की हानि हुई है। कुपोषित लोगों की संख्या में 815 लाख लोग विकासशील देशों में, 28 लाख संक्रमित राज्यों में तथा 9 लाख औद्योगिक देशों से संबंधित हैं।

यदि विश्व के लगभग 2.5 अरब लोग न्यूनतम वेतन में जीवनयापन कर रहे हैं। तब भी सन 1990 के दशक में गरीबी उन्मूलन की प्रक्रिया मंद हो गई, जोकि विकास प्रतिमान तथा गरीबी के लक्षणों के उत्पन्न होने की संभावना के परीक्षण की आवश्यकता पर बल देता है। अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) तथा अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO) के अनुसार पिछले एक दशक की (1995-2005) औसत सकल घरेलू उत्पाद वृद्धि दर तथा सहस्राब्दी विकास लक्ष्यों (MDG) की प्राप्ति हेतु आवश्यक वृद्धि की जरूरत है, किन्तु औद्योगिक अर्थव्यवस्था को छोड़कर आय, गरीबी तथा संभावनाओं के चलते 2 अमरीकी डॉलर प्रतिदिन के अर्जन के अवसर अभी दूर हैं। यदि पूर्वी तथा दक्षिण एशिया में इस लक्ष्य को प्राप्त करने की क्षमता है फिर भी 2 अमरीकी डॉलर प्रतिदिन के लक्ष्य को पार करने की आशा अभी दिखाई नहीं देती है।

सहस्राब्दी विकास लक्ष्यों (Millennium Development Goals - MDGs) को यदि कार्य-विहीन लक्षणों के माध्यम के साथ पाया नहीं जा सकता, फिर भी गरीबी नियंत्रण की वर्तमान प्रबलता के फलस्वरूप नीति परिवर्तन परिणामों में महत्त्वपूर्ण बदलाव लाया जा सकता है, अन्यथा इसके परिणाम लोगों को भयंकर संरचनात्मक हिंसा की ओर उन्मुख कर सकते हैं।

अमरीकी अर्थव्यवस्था का विश्लेषण करते हुए फॉस्टर और मेगडॉफ ने यह दिखाया कि वेतन के प्रतिशत की घटती हुई प्रवृत्ति के कारण असमानता और लाभ में वृद्धि कर रही है। सन 1972 में गैर-कृषिगत मजदूर का 8 घंटे का वेतन 71-92 अमरीकी डॉलर था जो 2006 में 65-92 अमरीकी डॉलर हो गया। सकल घरेलू उत्पाद में भी 2007 में 70% तक वृद्धि देखने को मिली, जबकि निवेश और बचत में कमी के परिणामस्वरूप अर्थव्यवस्था में वृद्धि के कारण वास्तविक अर्थव्यवस्था से अलगाव उत्पन्न हो गया था। सन 2007 में सकल घरेलू उत्पादन 40% से 100% तथा निजी ऋण में भी 151% से 373% की वृद्धि के कारण घरेलू ऋण आपूर्ति में बढ़ोतरी तो हुई फिर भी अर्थव्यवस्था में कुल निवेश में 3% से 2% तक गिरावट देखने को मिली, जिसके फलस्वरूप कटौती तथा कम होता हुआ पारिश्रमिक प्रत्येक देश की दशा बनकर प्रकट होने लगी। औद्योगिक देशों ने अपनी अर्थव्यवस्था को वित्तीय संकटों से बचाने हेतु आकर्षक पैकेज निकालने प्रारंभ किए, जोकि बाजार सुधार के लिए अपर्याप्त सिद्ध हुए। इसके लिए आवश्यक यह है कि राज्य का बाजार से नियंत्रण तथा हस्तक्षेप को कम किया जाए तथा बाजार को ही निर्णय करने की शक्ति प्रदान की जाए।

यद्यपि व्यावसायिक निगमों ने संसार को वित्तीय संकटों से बचाने हेतु कर दाताओं को अनेक पैकेज प्रदान किए तब भी वैश्विक आर्थिक मंदी के चलते विकासशील देशों के लिए प्रतिभूति निर्गम सरल नहीं हो पाया और जीवन दशा पर इसके फलस्वरूप नकारात्मक प्रभाव पड़ने लगे।

www.neerajbooks.com

विज्ञान और प्रौद्योगिकी का भूमंडलीकरण

आदिम मानव सामाजिक संरचना प्रौद्योगिकी तथा कौशल के विकास के अभाव में पूर्णतः प्रकृति के अधीन था। पारस्परिक आदान-प्रदान के न्यूनतम अवसर तथा सीमित प्रौद्योगिकी और भौगोलिक ज्ञान के फलस्वरूप मनुष्य प्राकृतिक बाधाओं का सामना करने में अक्षम बना रहा, किन्तु जब मनुष्य ने पत्थर से नुकीले हथियारों तथा आग के इस्तेमाल करना प्रारंभ किया तो इसने मनुष्य के जीवन-निर्वाह हेतु भौतिक संसाधनों के संग्रहण के साथ उत्पादन के लिए औजारों व हथियारों की तलाश का मार्ग भी प्रशस्त किया। दिशासूचक यंत्र (compass) का आविष्कार भौगोलिक ज्ञान तथा संसाधनों तक पहुँच व नियंत्रण की दिशा में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण खोज थी।

ज्ञान के आधार पर समाज उच्च सुख-सुविधा तथा बौद्धिक चेतना को प्राप्त करता हुआ एक क्षेत्र के संचित ज्ञान का प्रयोग दूसरे क्षेत्र में करते हुए समाज की कठिनाईयों की निर्बाधता तथा उसके प्राकृतिक प्रसार को न्यूनतम करने में अपना योगदान दिया है, जैसे–अरबों द्वारा 1 से 9 तक गणना, भारत के आर्यभट्ट द्वारा 0 की खोज, न्यूटन का गुरुत्वाकर्षण का नियम, आर्किमिडीज का घनत्व सिद्धांत, आइन्सटाइन का सापेक्षता सिद्धांत तथा मार्क्स के द्वंद्वात्मक भौतिकवाद और वर्ग संघर्ष के नियम तथा अन्य अनेक खोजों तथा आविष्कारों ने समाज और विज्ञान के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन लाते हुए मनुष्य की कठिनाइयों को सरल बनाने का यथासंभव प्रयत्न किया है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी के साथ हस्तकौशल की उन्नति के कारण औद्योगिक क्रांति का विकास हुआ, जिसके फलस्वरूप जेम्स वाट ने भाप इंजन, जार्ज स्टीफन ने भाप चालित रेल इंजन तथा राइट बंधुओं ने हवाई जहाज का आविष्कार कर परिवहन क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तनों को आरंभ किया। तकनीकी तथा मशीनों के विकास ने प्रकृति को मनुष्य के अधीन करने में समर्थ बना दिया। जहां एक ओर, तकनीकी और चिकित्सा विज्ञान के जीवन प्रत्याशा की गुणवत्ता में वृद्धि की, वहीं दूसरी ओर अंतरिक्ष शोध उपग्रहों के माध्यम से सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में क्रांति ने मनुष्य के अस्तित्व को एक कोने से दूसरे कोने तक प्रसारित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया। लोहे के आविष्कार के प्रारंभिक समय से ही कृषि क्षेत्र में मानसून की अस्थिरता की समस्या में कमी लाने, बीजों की गुणवत्ता, उर्वरकों तथा कीटनाशकों के प्रयोग और मशीनीकरण के प्रयोग द्वारा भण्डारण की समस्या, विपणन आदि को कम करके विकास व उन्नति को प्राप्त करने के प्रयत्न किए गए हैं, जिससे कृषि क्षेत्र के उत्पादन में वैश्विक वृद्धि ने नवीन कीर्तिमानों को प्राप्त किया। हालांकि खाद्य असुरक्षा की समस्या की निवारण की दिशा में अभी लम्बा मार्ग तय करना बाकी है, फिर भी ज्ञान और प्रौद्योगिकी के भूमंडलीकरण ने मानव की सेवा क्षेत्रों में समानता तथा पहुँच हेतु जीवन को सुविधा संपन्न तथा आरामदायक बनाया है।

21वीं शताब्दी में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर दीर्घकालीन विकास हेतु प्रौद्योगिकी का हस्तांतरण आवश्यक है और इसके लिए घरेलू अर्थव्यवस्था द्वारा प्रेरित समकालीन प्रौद्योगिकी के मानकों से प्रौद्योगिकी-संस्कृति की ओर परिवर्तन करना भी अनिवार्य हो जाता है, जिसके अंतर्गत प्रौद्योगिकी हस्तांतरण के प्रतिमानों में नवीन सूचना प्रौद्योगिकी का समावेशन करने के दौरान वैश्विक बाजार का उपयोग करना चाहिए। इस मुक्त प्रौद्योगिकी ज्ञान के अन्तर्गत–

(क) कार्यकुशल तकनीकियां औद्योगिकीकृत और औद्योगिकीकरण की ओर मनुष्य अर्थव्यवस्थाओं के लिए लाभदायक सिद्ध होंगी, तथा

(ख) प्रौद्योगिकी के वाणिज्यकरण का खुला प्रस्ताव उभरती हुई मौजूदा तकनीकी आधारित अर्थव्यवस्था हेतु भी कल्याणकारी होगा।

मेयर (2000) का यह मानना है कि लघु आय वाले देश भूमंडलीकरण के माध्यम से लाभों के अवधार्य को प्रौद्योगिकी के आयात तथा अपनी घरेलू श्रम शक्ति की निपुणता के स्तर में वृद्धि करके प्राप्त कर सकते हैं, क्योंकि इसके प्रभाव के फलस्वरूप मानव केवल पूंजी में निवेश कौशल के घटते हुए परिणामों की ओर उन्मुख होंगे, जबकि अकेला बढ़ा हुआ प्रौद्योगिकी हस्तांतरण चिरस्थायी रूप से संभव नहीं है, जिससे आय असमानता के नकारात्मक विकास से प्रभावित हो सकती है। पूर्वी एशिया विकास अनुभवों का एक प्रमाण है, जिसने तीव्र औद्योगिकीकरण तथा शिक्षा व्यवस्था के द्वारा कौशल संचयन सहित आर्थिक गतिविधियों की मात्रा में पीढ़ी-दर-पीढ़ी सुधार करते हुए विकास की प्रशंसनीय दिशा को प्राप्त किया है। ऐसा करते समय न केवल अग्रणी देशों के साथ प्रौद्योगिकी अन्तराल में कमी से शिक्षित श्रमिकों की मांग में वृद्धि हुई, बल्कि शिक्षित कामगारों की आर्थिक संभावनाओं के लिए अनुभव तथा प्रशिक्षण का भी प्रबंध हो गया। विकसित तथा अल्पविकसित देशों के मध्य अंतर यह है कि कम आय वाले गरीब देशों में अत्यधिक जटिल कौशल निर्माण प्रक्रिया आवश्यक रूप से नहीं हो पाई है, किन्तु उन्हें विशिष्ट क्षेत्रों में आत्मनिर्भर होने के लिए प्राथमिक क्षेत्रों पर आधारित होने की आवश्यकता है, जिसमें अप्रशिक्षित श्रमिक द्वारा मजबूत निर्माण और सेवाओं के द्वारा विजातीयता का प्रदर्शन हो रहा हो उपरोक्त प्रयत्न बढ़े हुए बजटीय खर्च के परिणाम तक विस्तृत हो सकता है। इसके कारण बहुधा गरीब देश ही हानि उठाते हैं, क्योंकि अतिरिक्त

www.neerajbooks.com